दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक : 26.04.2025

प्रकाशनार्थ

प्रभावी शिक्षण हेतु शिक्षण कौशलों का व्यावहारिक ज्ञान आवश्यकः– प्रो. (डॉ.) गीता सिंह

दिनांक 26.04.2025 गोरखपुर। बी.एड. विभाग, दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोरखपुर में विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसमें विशिष्ट वक्ता के रूप में प्रो. (डॉ.) गीता सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष बी.एड. विभाग, दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय ने 'प्रभावी शिक्षण में शिक्षण कौशलों की उपादेयता' विषय पर अपना वक्तव्य दिया। आपने कहा कि शिक्षण का कार्य प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित दोनों प्रकार के शिक्षक करते हैं, लेकिन प्रशिक्षित शिक्षक का शिक्षण–कार्य प्रभावी होता है क्योंकि उसके पास शिक्षण कौशलों का व्यावहारिक ज्ञान होता है और वे उनका प्रयोग करने में दक्ष होते हैं। शिक्षण कौशल से अभिप्राय शिक्षक द्वारा अपनाए जाने वाले उन तकनीकों, रणनीतियों एवं अन्तरूक्रिया से है, जिनके द्वारा वह विद्यार्थी के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाने का प्रयास करता है। विद्यार्थियों को बेहतर ढंग से सिखाने हेतु प्रभावी शिक्षण के लिए शिक्षक के अन्दर विभिन्न शिक्षण कौशलों जैसेरू उद्देश्य लेखन कौशल, प्रस्तावना कौशल, श्यामपट्ट लेखन कौशल, पुनर्बलन कौशल, प्रश्नीकरण कौशल, अनुशीलन प्रश्न कौशल, कक्षा प्रबन्धन कौशल, पाठ समापन कौशल आदि का व्यावहारिक ज्ञान होना आवशयक है। शिक्षण–अधिगम सामग्री का उचित प्रयोग करके तथा प्रदर्शन एवं प्रयोग शिक्षण विधि की सहायता से भी शिक्षक अपने शिक्षण को प्रभावी बना सकता है। शिक्षण कौशलों का प्रयोग करके शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया को सरल, सुगम और रुचिकर बना सकता है।

कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में प्रभावी शिक्षण करने हेतु 'शिक्षण–अधिगन सामग्री' निर्माण प्रतियोगिता का आयोजन द्वितीय सेमेस्टर के प्रशिक्षुओं के लिए किया गया। 'टी.एल.एम.' के अन्तर्गत प्रशिक्षुओं के द्वारा विभिन्न विषयों पर मॉडल एवं चार्ट नर्मित कर उनकी प्रस्तुति की गई। इस प्रतियोगिता में विद्यार्थियों में बढ़ती हुई आत्महत्या की प्रवृति को रोकने के लिए प्रशिक्षुओं द्वारा निर्मित 'एंटी सुसाइड फैन' को प्रथम स्थान, 'भारतीय शिक्षा प्रणालीरू वैदिक से आधुनिक' को द्वितीय स्थान तथा 'वायरलेस पावर ट्रांसमिशन' एवं 'विंड पावर प्लांट' को संयुक्त रूप से तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त प्रशिक्षुओं द्वारा 'ऑनलाइन ऑफलाइन एजुकेशन', 'स्वच्छ भारत अभियान', 'हरित गृह प्रभाव', 'स्पड गन' एवं 'भारत के स्वास्तिक दर्शन' पर आधारित रचनात्मक एवं क्रियात्मक शिक्षण सहायक सामग्री का निर्माण किया गया।

कार्यक्रम की औपचारिक शुरुआत माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पणकर एवं दीप प्रज्वलित करके किया गया। सरस्वती वंदना प्रशिक्षु अंशिका, हेमा, हर्षिता तथा स्वागत गीत अंशू, निधि, पूनम द्वारा प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्रशिक्षु हेमा गुप्ता ने किया। आभार ज्ञापन प्रथम वर्ष के प्रशिक्षु नेहा साहनी के द्वारा किया गया। इस अवसर पर विभाग की प्रभारी प्रो० (डॉ.) शुभ्रा श्रीवास्तव, डॉ. सुभाष चन्द्र, श्री राकेश कुमार सिंह, श्री प्रदीप कुमार यादव, श्रीमती शालिनी पारिक, एवं चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी.जी. कॉलेज, गोरखपुर की एम.एड. द्वितीय सेमेस्टर के इन्टर्नशिप की छात्राएँ तथा महाविद्यालय के बी.एड. के समस्त प्रशिक्षु उपस्थित रहे ।

(डॉ.) शैलेश कुमार सिंह
प्रभारी, सूचना एवं जनसम्पर्क